ओमशान्ति। रूहानी बाप जिसका नाम शिव है वह बैठ अपने बच्चों को समझाते हैं। रूहानी बाप सभी का एक ही है। पहले2 यह बातें समझानी है तो फिर आगे समझाना सहज होगा। अगर बाप का परिचय हो न मिला होगा तो प्रश्न पिछाड़ी प्रश्न करते रहेंगे। पहले यह निश्चय बिठाना है गीता का भगवान निराकार बाप है। न कि कोई मनुष्य। पहले2 चित्र ही यह रखना है। गीता का भगवान कौन है। जिस से सत्ता भगवान सिद्ध हो जाये। पतित पावन परम पिता परमात्मा ही हमको समझाये रहे हैं कि गीता का भगवान कृष्ण नहीं बल्कि मैं हूं। पहले2 तो यह निश्चय कराना है। सारी दुनिया को यह पता नहीं है कि गीता का भगवान कौन है। वह कृष्ण के लिए कह देते हैं। हम कहते हैं परम पिता परमात्मा निराकार शिव गीता का भगवान है। वह ही ज्ञान का सागर है। पहले2 यह निश्चय बिठाना है। मुख्य है सर्व शास्त्र मई शिरोमणी गीता। भगवान के लिए ही कहते हैं हे प्रभु तेरी गत मत न्यारी। कृष्ण के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। बाप जो सत्य है वह जरूर सत्य ही सुनावेंगे। दुनिया पहले नई सतोप्रधान थी। अभी दुनिया पुरानी तमोप्रधान है। दुनिया को बदलने वाला एक ही बाप है। बाप कैसे बदलते है वह भी समझाना चाहिए। आत्मा जब सतोप्रधान था तब दुनिया भी सतोप्रधान स्थापन हो। पहले2 तुम बच्चों को अन्तर मुख होना है। मस्ती तो क2 न करनी है। अन्दर घुसते है तो बहुत चित्र देख पूछते ही रहते हैं। पहले2 समझानी ही एक बात चाहिए। जास्ती पूछने की मार्जिन न मिले। बोलो पहले तो एक बात पर निश्चय करो फिर और समझो। फिर तुम 84 जन्मों के चक्र ले आ सकते हो। बाप कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त में प्रवेश करता हूं। यह प्रजापिता ब्रह्मा तो पतित है। इनको ही बाप कहते हैं अपने जन्मों को नहीं जानते हो। बाप हमको प्रजा पिता ब्रह्मा द्वारा बैठ समझाते हैं। पहले तो बाप पर ही समझाना है। बाप को समझने से फिर कोई संशय न होगा। बोलो बाप सत्य है। वह कब असत्य नहीं सुनाते है। बेहद का बाप ही राजयोग सिखलाते हैं। शिव रात्री गाई जाती है। तो जरूर शिव यहां आये होंगे ना। जैसे कृष्ण जयन्ती भी यहां ही मनाते हैं। शिव रात्री भी है तो जरूर यहां आते होंगे। कहते हैं मैं ब्रहमा द्वारा स्थापना करता हूं। उस एक ही निराकार बाप के सब बच्चे हैं। तुम भी उनके औलाद हो। और फिर प्रजा पिता ब्रहमा के भी औलाद हो। प्रजा पिता ब्रहमा द्वारा स्थापना की तो जरूर ब्राहमण और ब्राहमणियां होंगे। बहन भाई हो गये। इस में पवित्रता रहती है। गृहस्थ व्यवहार में पवित्र रहने की यह है मिलती। बहन-भाई फिर कब क्रिमनल दृष्टि होनी न चाहिए। 21 जन्मों लिए दृष्टि सुधर जाती है। बाप ही बच्चों को शिक्षा देंगे ना। कैरेक्टर सुधारते हैं। इस पुरानी पतित दुनिया में कोई कैरेक्टर नहीं है। सब में 5 विकार है। यह है ही पतित विशश दुनिया। फिर वायसलेस दुनिया कैसे बनेगी सिवाय बाप के कोई बना न सके। अब बाप पवित्र बनाये रहे हैं। यह है सभी गुप्त बातें। हम आत्मा है; आत्मा को परमात्मा से मिलना है। सभी पुरुषार्थ करते ही भगवान से मिलने लिए। भगवान एक ही निराकार है। हम आत्मा भी निराकारी दुनिया से आते हैं। और लिबरेटर गाईड भी निराकार परम पिता परमात्मा को ही कहा जाता है। दूसरे धर्म वाले कब कृष्ण को लिबरेटर गाईड नहीं कहेंगे। परम पिता परमात्मा ही आये लिबरेट करते हैं। अर्थात तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। गाईड भी करते है। तो पहले2 बाप का परिचय देना है जो बाप ही गीता का भगवान है। जिस ने ही भारत को हेविन बनाया है। देवी देवता धर्म की स्थापना की, पहले तो यह एक ही बात बुधि में बिठाओ अगर न समझे तो छोड़ देना चाहिए। बाप को न समझा तो बैसे क्या फायदा। भल चले जावे। तुम मूंझो नहीं। तुम दीपक ... हो। तुम जानते हो आसुरी सम्प्रदाय तो वकवाद करती ही रहेंगे। असुरों के विघ्न ... यह है ही रुद्र ज्ञान यज्ञ। कृष्ण ज्ञान यज्ञ नहीं कहेंगे। तो पहले2 बाप का परिचय का पाईन्ट एक की याद करो। उनकी ही महिमा है। और कोई की महिमा है नहीं। याद भी उनको करना है।

। बाप कहते हैं मन्मनाभव। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना पद पावेंगे। आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हो रहा है। इनकी डिनायस्टी है। और धर्म वाले कोई डिनायस्टी नहीं स्थापन करते। बाप तो आये कर सभी को मुक्त करते हैं। फिर अपने2 समय पर और धर्म स्थापकों को आये धर्म स्थापन करना है। वृद्धी होनी ही है। पतित बनना ही है। पतित से पावन बनाना यह तो एक बाप ही काम है। वह तो सिर्फ आये धर्म स्थापन करेंगे। उस में बिड़े-बिड़ाई (बड़ाई) की बात ही नहीं। बिड़े-बिड़ाई है हो एक की। कई लोग क्राईस्ट को पिछाड़ी कितना मानते हैं। उनको भी समझाया जाये प्रेसेप्टर, लिबरेटर, गाईड तो एक गाड फादर ही है। बाकि क्राईस्ट ने क्या किया। उनके पिछाड़ी क्रिश्चन धर्म की आत्मायें आती रहती हैं। नीचे उतरते रहे। दुःख से छुड़ाने वाला तो एक ही बाप है। यह सब पाईन्टस अच्छी रीत बुधि में धारण करनी है। एक गाड को ही मर्सीफुल कहा जाता है। क्राईस्ट कोई मर्सी नहीं करते। एक भी मनुष्य किसी पर मर्सी नहीं करते। मर्सी होती है बेहद की। एक बाप ही सभी पर रहम करते हैं। सतयुग में सब सुख शान्ति में रहते हैं। दुःख की बात ही नहीं। बच्चे एक बात अपने पर किसको निश्चय कराते नहीं। और और बातों में चले जाते हैं। फिर कहता गला ही खराब हो गया। पहले2 बाप का परिचय देना है। तुम और बातें में जाओ ही नहीं। बोलो बाप तो सच्च बोलेंगे ना। हम ब्रह्माकुमारियों को बाप ही सुनाते हैं। यह चित्र उन्हें ने बनवाई हैं। इसमें संशय ना लाना चाहिए। संशय बुधि विनश्यन्ति। निश्चय बुधि विजयन्ति। पहले तुम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। और कोई उपाय नहीं। पतित पावन बाप ही है। बाप कहते हैं देह के सर्व सम्बन्धों को छोड़ मामेकं याद करो। पक्का भी बनाना है। कृष्ण तो पूरे 84 जन्म लेते हैं। सो जरूर पतित तमोप्रधान होगा ना। जिसमें प्रवेश करते हैं उसको भी पुरुषार्थ कर सतोप्रधान बनाना है। बनेंगे पुरुषार्थ से। फिर ब्रह्मा और फिर विष्णु का कनेक्शन भी बताना है। बाप तुम ब्राह्मणों को राजयोग सिखाते हैं। तो तुम देवी देवता विष्णुपुरी के मालिक बनते हो। फिर तुम ही 84 जन्म ले फिर अन्त शूद्र बनते हो। फिर बाप शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं। ऐसे और कोई बताये न सके। पहले2 बात है बाप का परिचय देना। इस हिसाब से गीता भगवद, रामायण आद सब झूठी हो गई। भक्ति मार्ग है ठूठ खड़ा। बाप कहते हैं मुझे ही पतितों को पावन बनाने आना पड़ता है। ऐसे नहीं कि ऊपर से आ देता हूं। इनका ही नाम है भागीरथ। तो जरूर इन में प्रवेश करेंगे। यह है भी पतित। बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। फिर सतोप्रधान बनते हैं। इसके लिए बाप युक्ति बतलाते हैं कि अपने को आत्मा समझ मामेकं याद करो। मैं ही सर्वशक्तिवान हूं। मुझे याद करने से तुम्हारे में शक्ति आ जावेगी। तुम विश्व के मालिक बनेंगे। यह (ल०ना०) वर्सा इन्हों को बाप से मिला है। कैसे मिला? वह समझाते हैं। प्रदर्शनी म्युजियम आद में भी तुम कह दो पहले एक बात समझो फिर और बातों में जाना। यह बहुत जरूरी है समझना। नहीं तो दुःख से छूट नहीं सकेंगे। पहले जब तक निश्चय नहीं किया है तो तुम कुछ भी समझ न सकेंगे। इस समय है ही भ्रष्टाचारी दुनिया। यह भी तुम जानते हो देवी देवताओं की श्रेष्ठाचारी दुनिया थी। वह ही फिर 84 जन्म ले भ्रष्टाचारी बनते हैं। ऐसे2 समझाना है। मनुष्य का नब्ज़ भी देखनी चाहिए। कुछ समझता है या तवाई है। अगर तवाई है तो फिर छोड़ देना चाहिए। टाईम वेस्ट नहीं करना है। पात्र, कुपात्र को समझाने की भी बुधि चाहिए। जो समझने वाला होगा उनका चेहरा ही बदल जावेगा। पहले2 तो खुशी की बात देनी है। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। बाबा जानते हैं याद की यात्रा में बच्चे बहुत ढीले हैं। बाप को याद करने की मेहनत है। इसमें ही माया बहुत हराती है। यह भी खेल बना हुआ है। बाप ही समझाते हैं यह कैसे बना बनाया खेल है। दुनिया मनुष्य तो रिंचक भी नहीं जानते। बाप की याद में रहने से तम किसको समझाने में भी एक दो तो कुछ न कुछ ईर्षा निकालते ही रहेंगे। बाबा कहते हैं तुम भले कुछ भी तकलीफ न लो।

20-10-67

स्थापना तो जरूर होनी ही है। भावी को कोई टाल नहीं सकते। हुल्लास में रहना चाहिए। बाप से तुम बेहद का वर्सा ले रहे हो। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। बहुत प्रेम से बैठ समझाना है। बाप को याद करते प्रेम में आंसू आ जाने चाहिए। और तो सभी सम्बन्ध हैं कलियुगी। यह है रूहानी बाप का सम्बन्ध। यह तुम्हारे आंसू विजय माला के दाने बनते हैं। बहुत थोड़े हैं तो बाप के याद में आंसू आते होंगे। ऐसे प्रेम से याद करने वाले बहुत थोड़े हैं। कोशिश कर जितना हो सके अपना टाईम निकाल अपने भविष्य का तोशा बनाना चाहिए। प्रदर्शनी में इतने ढेर चित्र होने न चाहिए। न इतने चित्रों की दरकार है। मुख्य रवन चित्र हैं गीता का भगवान कौन। इसके बाजु में लक्ष्मी नारायण, सीढ़ी का। बस। बाकि इतने चित्र कोई काम के नहीं। भक्ति मार्ग में कितने चित्र, शास्त्र आद हैं। इस ज्ञान मार्ग में लिखत (शास्त्र) की कोई दरकार नहीं। यह तो बुधि से समझाने की बात है। एक बार समझ लिया बुधि में बैठ जावेगा। जितना हो सके याद की यात्रा को बढ़ाना है। भुल फिकरात रहनी है पतित से पावन बनने की। बाबा का बन कर और फिर बाबा के आगे सज़ा खावेंगे यह तो बड़ी दुर्गति की बात है। अब याद की यात्रा पर न रहेंगे तो फिर बाप के आगे सजा खाने समय बहुत 2 लज्जा आवेगी। सज़ा न खानी पड़े यह सब से जास्ती पुरुषार्थ करना है। अच्छा मीठे2 सिकिलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुड मार्निंग।

रही हुई प्वाइन्ट्सः- तुम भी होली, वसंत भी हो। बाबा कहते हैं मैं भी हूं वसंत भी हूं। छोटी सी बिन्दी हूं। और फिर ज्ञान का सागर हूं। तुम्हारी आत्मा में भी ज्ञान भरती है। 84 जन्मों का सारा राज़ तुम्हारे बुधि में है। जैसे तुम आत्मा छोटी हो वैसे परम पिता परमात्मा भी छोटा (सुप्रीम) है। फिर वसंत भी है। ज्ञान की वर्षा भी करते हैं। ज्ञान का एक एक रत्न कितना अमूल्य है। इनकी वैल्यु कोई कर न सके। इस लिए बाबा कहते हैं पदमा पदम भाग्यशाली। तुम्हारे चरणों में पदम निशानी भी दिखाते हैं। इनको कोई समझ नहीं सकते। मनुष्य पदमपति नाम रखाते हैं। समझते हैं उनके पास बहुत धन है। पदमपति का एक सरनेम भी रखते हैं। बाप बैठ सब बातें समझाते हैं। फिर कहते हैं कि मूल बात है बाप को याद करो। और 84 के चक्र को याद करो। यह नालेज भारतवासियों के लिए ही है। तुम ही 84 जन्म लेते हो। यह भी समझ की बात है ना। और सन्यासी आद को स्वदर्शन चक्रधारी नहीं कहेंगे। तुम हो स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। देवताओं को नहीं कहेंगे। देवताओं में ज्ञान होता ही नहीं है। तुम कहेंगे हमारे में सारा ज्ञान है। इन लक्ष्मी नारायण में भी नहीं है। तो मनुष्य सुन कर समझ जावेंगे। बाप तो यथार्थ बात समझाते हैं। यह ज्ञान बड़ा वन्डरफुल है। तुम कितने गुप्त स्टुडेन्ट हो। तुम कहेंगे हम पाठशाला में जाते हैं। भगवान हमको पढ़ाते हैं। एमआबजेक्ट क्या है? हम यह (लक्ष्मी नारायण) बनेंगे। मनुष्य सुन कर बहरे हो जावेंगे। हम अपने हेड-आफिस में जाते हैं। क्या पढ़ाते हैं? मनुष्य से देवता, बेगर से प्रिन्स बनते हैं। बाप हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। तुम्हारी यह चित्र भी बड़ी फर्स्ट क्लास है। धन दान भी हमेशा पात्र को किया जाता है। पात्र तुमको कहाँ मिलेंगा। शिव के, लक्ष्मी नारायण के, राम-सीता के मंदिरों में। वहाँ जाये तुम उन्हों की सेवा करो। अपना टाईम वेस्ट न करो। गंगा नदी पर भी तुम जाये यह समझाओ पतित पावनी यह गंगा है या परम पिता परमात्मा है? सर्व की सदगति यह पानी करेगा या बेहद का बाप करेगा। तुम इस पर अच्छी रीत समझा सकते हो। भल गाते भी हैं पतित पावन... फिर भी पत्थर बुधि गंगा में स्नान करने जाते रहते हैं। अब तुम पुण्यात्मा बनते हो। विश्व का मालिक बनने रास्ता बताते हो। दान करते हो। कौड़ी जैसे को हीरे जैसा विश्व का मालिक बनाते हो। भारत विश्व का मालिक था ना। तुम ब्राह्मणों को देवताओं से ऊंच कुल है। यह (बाबा) तो समझते हैं बाबा का एक सिकिलधा बच्चा हूं। बाबा ने यह हमारा ... है। तुम्हारे सिवाय और कोई यह बातें समझ न सके। बाबा की हमारे पर सवारी हुई है। हम रथ पर चढ़ाया है। अर्थात शरीर दिया है कि सर्विस करो। इसका रिटर्न बाबा कितना देते हैं। ओ...।